BA Part I (H)
Paper II

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
RSJ College Rajnagar

परिवार का उद्‌विकास (Evolution of Family - L.H. Morgan) :- परिवार समाज की केन्द्रीय इकाई है इसे संस्कृति का संवरण करने वाली महत्वपूर्ण संस्था के रूप में स्वीकार किया जाता है। 'लीग ऑफ इराकोज तथा सिस्टम ऑफ कन्सेन्ग्युनिटी एण्ड एफीनिटी ऑफ द ह्युमन फैमली' में परिवार के उद्‌विकास को स्पष्ट किया है। मार्गन ने लिखा है, "परिवार की संरचना को प्रभावित करने वाला प्रमुख तत्व विवाह है।" विवाह के स्वरूप के आधार पर ही मार्गन ने परिवार की विभिन्न अवस्थाओं की विवेचना की है।

(1) अनिश्चित एवं अव्यवस्थित परिवार :- मार्गन के अनुसार अव्यवस्थित परिवार अनिश्चित यौन सम्बन्धों के परिणामस्वरूप निर्मित हुए। परिवार के उद्‌विकास की यह प्रारम्भिक अवस्था थी। मानव उद्‌विकास की प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य के यौन सम्बन्ध पशु की भाँति पूर्णत: स्वच्छन्द थे। यौन स्वच्छन्दता के इस युग में किसी तरह की विवाह सम्बन्धी मान्यतायें या निषेध प्रचलित नहीं थे। व्यक्ति का कोई निश्चित परिवार नहीं था। इस अवस्था में नातेदारी सम्बन्धों को स्पष्ट करने वाले

सम्बोधनों और नियमों की कोई भी व्यवस्था समाज में नहीं थी।

(2) समूह विवाही परिवार → उद्विकास क्रम के आधार पर मार्गन ने समूह विवाही परिवारों को भी दो प्रकारों में बांटा है : a) रक्त सम्बन्धी समूह विवाही परिवार : इस समय समूह विवाह के रूप में विवाह जैसी संस्था तो अस्तित्व में आ गयी परन्तु समान रक्त के स्त्री-पुरुष अथवा भाई-बहन के बीच भी विवाह सम्बन्ध स्थापित करके परिवार का निर्माण किया जाने लगा।

(b) अरक्त सम्बन्धी समूह विवाही परिवार : इस अवस्था में अनेक पुरुष तथा अनेक स्त्रियां आपस में विवाह करते थे। इस प्रकार के विवाह साथियों में रक्त सम्बन्ध नहीं पाये जाते थे। समूह विवाही परिवार तक विकसित होने वाली ये सभी अवस्थाएँ जंगली युग तक ही सीमित रहीं।

(3) बहुपति विवाही परिवार → इस प्रकार के परिवारों का उदय बर्बरता युग का आरम्भ होने के साथ ही हुआ। आदिम समाजों में जहाँ स्त्रियों की संख्या कम थी, वहां एक स्त्री को अनेक पुरुषों से दाम्पत्य सम्बन्ध रखते हुए परिवार की स्थापना करने की अनुमति मिल गयी। मार्गन ने भारत के तमिलों में पाये जाने वाले वर्गीकृत नातेदारी सम्बोधनों के आधार पर भारत के अनेक समूहों में इस -

प्रकार के परिवारों के प्राचीन अस्तित्व की चर्चा की है। इस अवस्था में मातृवंशीय परिवारों का निर्माण आरम्भ हुआ।

(A) पितृवंशी अथवा बहुपत्नी विवाही परिवार → मार्गेन ने परिवार के उद्विकास की इस अवस्था को बर्बरता युग के अन्तिम चरण के एक महत्वपूर्ण लक्षण के रूप में स्वीकार किया है। मार्गेन के अनुसार जब समाज में कृषि के विकसित उपकरणों का उपयोग होने लगा, नगरों का विकास हुआ और बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित हुए तब पुरुषों ने मातृसत्तात्मक परिवारों को समाप्त करके पितृसत्तात्मक परिवारों की स्थापना की। इस अवस्था में एक पुरुष अनेक स्त्रियों से विवाह कर सकता था जिसके फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था में स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा। मार्गेन के अनुसार इस प्रकार के परिवारों का उद्भव-आर्थिक व्यवस्था के कारण सम्भव हो सका। अतः स्पष्ट है कि इस नयी पारिवारिक संरचना से समाज में स्त्रियों की स्थिति प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई।

(5) एक विवाही परिवार :- मार्गन ने परिवार के उद्विकास की अन्तिम अवस्था में एक विवाही परिवार को बतलाया है। सभ्यता के उदय के साथ-साथ परिवार की केन्द्रीय संस्था विवाह का स्वरूप पुनः परिवर्तित हुआ और समाज में एक विवाही परिवारों का उदय हुआ। सभ्यता के विकास के साथ ही परिवार का आकार छोटा होता गया साथ ही साथ परिवार पितृसत्तात्मक भी रही। इस अवस्था में स्त्री स्वंपुरुष के समान अधिकार प्राप्त होना आरम्भ हुए यद्यपि अन्ततः परिवार की वास्तविक सत्ता पुरुषों के पास ही केन्द्रित रही।

मार्गन ने परिवार के उद्विकास को विभिन्न चरणों के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया।